समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–

महाकौशल–संदेश

वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– 18 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा

RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

गौ–रक्षा के नाम पर हिंसा का विरोध करता है संघ

घाटी में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का समीक्षा सम्मेलन सम्पन

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की अखिल भारतीय बैठक आजादी के बाद पहली बार जम्मू कश्मीर में आयोजित हुयी जिसमे देश के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों पर चिन्तन और विचार विमर्श हुआ। साथ ही आने वाले समय के लिये संगठन के कार्यो का लेखा– जोखा तैयार किया गया। संघ की इस राष्ट्रीय बैठक में अमरनाथ यात्रा के दौरान आतंकी हमले, आतंकवाद देश की आंतरिक सुरक्षा और कश्मीर के वर्तमान हालात को लेकर भी चिन्तन हुआ।

18 जुलाई से 20 जुलाई तक चली इस बैठक में 195 से अधिक प्रान्त प्रचारक हिस्सा ले रहें हैं। सरसंध चालक श्रीमोहन भागवत नें जम्मू–कश्मीर के नवनिर्मित प्रान्त संघ कार्यालय का उद्घाटन किया। यह जम्मू–कश्मीर में संघ की पहली बड़ी बैठक है। द एशियन एज की रिपोर्ट के अनुसार सुरक्षा चिन्ताओं को व्यक्त किये जाने के बावजूद संघ ने यहॉ बैठक करने का फैसला लिया है। इस समीक्षा बैठक का आयोजन करने का उद्देश्य अलगाववादियों को यह संदेश देना है कि कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। सूत्रों ने यह भी संकेत दिये है कि गत वर्ष की घटनाओं एवं गतिविधियों के मद्देनजर आने वाले समय के लिये कार्यमसौदा तैयार किया जायेगा। पिछले एक साल से कश्मीर में सीमापार गोलीबारी, विरोध प्रदर्शन, आतंकी हमलों जैंसी कई बारदातें हो चुकी है।

गौ रक्षा के नाम पर हिंसा का विरोध

गौरक्षा से जुड़ी धटनाओं का राजनीतिकरण किये जाने पर रोक लगाने की मॉग करते हुये राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने कहा कि वह गा–रक्षा के नाम पर किसी भी तरह की हिंसा का समर्थन नही करता। संघ ने दोषियों के खिलाफ कारवाई की भी मॉग की। संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख मनमोहन वैद्य ने कहा कि गौरक्षा के नाम पर हिंसा को संघ से जोड़ने के बजाय, कारवाई कर दोषियों को दंड दिया जाना चाहिये। कानून को अपना काम करना चाहिये। गौ–रक्षा के नाम पर हिंसा और पीट–पीटकर हत्या कर देने से जुड़ी धटनाओं पर जवाब देते हुये श्री वैद्य ने कहा कि संघ किसी भी तरह की हिंसा का समर्थन नही करता। हमने यह बात पहले भी कही है। ऐसा हम हमेशा कहते रहे हैं। श्री वैद्य ने स्पस्ट किया कि ''संघ की दृष्टि में गौ–रक्षा' एक अलग मुद्दा है। गौ–रक्षा का अभियान आज से नही सैकड़ों वर्षो से चल रहा है। आपने यह भी कहा कि मीडिया द्वारा इसे एक विचार धारा से जोड़ने की कोशिश की जा रही है और विपक्ष इस मुद्दे का राजनीतिकरण करने का प्रयास कर रहा है' श्री वैद्य ने इस बात को पुनः दोहराया कि संघ ने कभी भी हिंसा का समर्थन नही किया। इस विषय पर राजनीति करना और समाज के एक बड़े हिस्से को नीचा दिखाने की कोशिश ठीक नहीं है। इस अखिल भारतीय सम्मेलन में 195 प्रचारकों के अलावा संघ से सम्बंद्ध सभी आनुषॉंगिक संगठनों के प्रमुख और शीर्ष नेता शामिल हुये। सरसंघ चालक मोहन भागवत,वरिष्ठ प्रचारक सर्वश्री भय्याजी जोशी, दत्तात्रेय हौस बोले और कृष्णगोपाल भी उपस्थित थे श्री वैद्य ने कहा कि ''इस देश की पहचान हिन्दुत्व है, जो किसी भी अन्य धर्म के खिलाफ नही है। हम सभी के कल्याण की चाहत रखते हैं।

विशिष्ट लोगों की संघ में आकर अनुभूति

जब संघ कार्य का फैलाव अधिक नहीं था, नागपुर, पूना और आसपास के क्षेत्र में अपना कार्य दिखता था, तब संघ शिक्षा वर्ग, संध शिविर, शाखा के कार्यक्रम ही संघ दिखाने और समझाने का' साधन थे। तब जिस किसी ने भी संघकार्य को निकट से देखा प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। फिर वो गांधी जी ने 1934 में वर्धा शिविर में आकर जातिगत भेदभाव से मुक्त वातावरण अनुभव किया हो, पण्डित मदन मोहन मालवीय जी ने संधशाखा में आकर संघ में आर्थिक साधनों का अभाव देखा हो, नेताजी सुभाषचंद्र बोस संचलन में कदम से कदम मिलाकर चलते स्वयंसेवकों के अनुशासन और सैनिक प्रशिक्षण से प्रभावित हो संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार को मिलने उनके आवास पर पहुंचे, कार्यक्रमों में नियमित आने वाले वीर सावरकर संघ शिविर में आना, अपने घर में आने के समान मानते थे। जयप्रकाश नारायण 1959 में संघ शिविर में आए। वे कहते थे ''यदि आरएसएस फासिस्टवादी संगठन है तो जे.पी. भी फासिस्ट है'' – ये सभी प्रसंग दिखाते हैं कि जो भी संघ के निकट आया प्रभावित हुए बिना न रहा। संघ में आया और संघ का हो गया।

भद्रकाली मंदिर तोड़कर बनाई जामा मस्जिद

—— प्रशान्त पोल

26 जून को जब सारा देश ईद की खुशियां मना रहा था, तब 'दैनिक भास्कर' ने अपने पहले पृष्ट पर एक खबर छाप कर हिन्दुओं के साथ भद्दा मजाक किया है..! 'दैनिक भास्कर' के सभी संस्करणों के पहले पृष्ट पर सबसे ऊपर समाचार था, 'सद्भाव और समानता की एक तस्वीर'। आगे लिखा था 'हिन्दु शैली के 152 स्तंभों से बनी 594 वर्ष पुरानी मस्जिद, कमल जैसा है इसके गुंबद का आकार।' समाचार अहमदाबाद की 'जामा मस्जिद' का था। साबरमति नदी के किनारे स्थित इस मस्जिद की गिनती देश की खूबसूरत मस्जिद में की जाती हैं। लेकिन यह मस्जिद प्राचीन हिन्दु और जैन मंदिरों के अवशेषों पर बनाई गयी है, जो हर कोई जानता हैं। पर्यटन के बारें में पूरे विश्व में सबसे अधिक विश्वसनीय माने जाने वाले प्रकाशक 'लोलनी प्लेनेट' ने लिखा हैं– 'Built by Ahmed Shah in 1423 ,the jama Masjid ranks as one of India's most beautiful mosques. Demolished Hindu and jain temples provieded the building mterials, and the mosques displayssome architectural fusion with these religions, notably in the lotus- like carving of some domes, which are supported by the prayer hall's 260 columns' (https: / www.loneyplanet.com/ india / ahmed–abad–ahdavad atterctions/ jama-masjid/a/poi-sig/ 478370/356239)

मूलतः यह मस्जिद 'भद्रकाली' मंदिर को तोड़कर बनाई गयी है। 1411 में अहमद शाह ने गुजरात सूबे पर कब्जा किया और कर्णावति को अपनी राजधानी बनाने का निर्णय लिया । कर्णावति में उस समय सावरमति नदी के किनारे एक किला था, जिसे भद्रा नाम से जाना जाता था। इस किले के अहाते में भद्र काली जी का एक सुंदर मंदिर था। इसी कारण किले का नाम भद्रा हुआ। बाद में कर्णावति का नाम अहमद शाह ने बदल कर अहमदाबाद किया और 1423 में भद्रकाली मंदिर को तोड़ कर उसे जामा मस्जिद बनाया गया। इसके काफी वर्षो बाद , जब गुजरात में मराठों का शासन हुआ तब उन्होने इसी परिसर में एक भद्रकाली का मंदिर बनवाया, जो वर्तमान में आस्था का केन्द्र हैं। दुनिया की किसी भी मस्जिद में प्रार्थना स्थल में खम्भे नही होते हैं या बहुत कम होते हैं। प्रार्थना करने के लिये एक खुली जगह होती है। लेकिन यहॉ तो 260 खम्भे है। उन पर भी आकृतियॉ उकेरी गई हैं। इस्लाम में मूर्ति पूजा निषेध हैं। फिर प्रार्थना स्थल में मूर्तियों और आकृतियों से भरे इतने खम्भें क्यू और कैसे...? इसके गुंबद पर कमल के फूल बने हैं। भद्रकाली का अर्थ होता हैं लक्ष्मी की देवी। लक्ष्मी जी को सबसे ज्यादा पसंद हैं कमल का फूल। यहॉ खिड़कियों पर ओम के चिन्ह भी है। यह सब क्यो..? क्योकि यह मूलतः मस्जिद थी ही नही । यह तो भद्रकाली जी के मंदिर को तोड़ कर बनाया गया हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार स्व. पुरूषोत्तम नागेश ने यह सप्रमाण सिद्ध किया हैं कि यह स्थान भद्रकाली जी का मंदिर था। किया हैं कि साठ के दशक मे इस तथाकथित मस्जिद के सामने के. सी. ब्रदर्स (कान्तिचंद ब्रदर्स) के नाम से एक दुकान थी। इसके मालिक एम.डी. शाह ने इस दुकान को गिराकर नई दुकान बनाई जिसका नक्सा अहमदाबाद नगर निगम ने पास किया । लेकिन दुकान के बनते ही जामा मस्जिद के ट्रस्ट की ओर से एम.डी. शाह को नाटिस भेजा गया और कहा गया कि उनकी दुकान मस्जिद से भी ऊंची है। अतः सबसे ऊपर की मंजिल को आप गिरा दे। शाह इस पर कुछ प्रतिक्रिया व्यक्त करते, उसके पहले अहमदाबाद नगर निगम ने उन्हे ऊपरी मंजिल को तोड़ने का नोटिस थमा दिया। इन सब बातो से परेशान होकर उन्हे किसी ने बताया कि पु. ना. ओक जी के पास बहुत कुछ जानकारी हैं। इसके बाद शाह जी ओक जी से मिले और चर्चा की। उन्होने एक बड़ा ही सरल और सीधा उपाय बताया। के.सी. ब्रदर्स के वकीलों द्वारा एक नोटिस जामा मस्जिद के प्रबंधन को भेजा गया जिसमे लिखा गया कि 'यह एक अपहृत हिन्दु मंदिर हैं, जिसे जामा मस्जिद बनाया गया हैं। अतः इसमे किसी भी मुसलमान का हक नही बनता है। इसलिये के.सी. ब्रदर्स की ऊपरी मंजिल को गिराने का सवाल ही नही उठता।' यह उत्तर मिलते ही मस्जिद प्रबंधन कमेटी ने अपना नोटिस वापस ले लिया और उस दिन से आज तक शाह को कमेटी की तरफ से एक भी नोटिस नही मिला। यह अकेला उदाहरण नही हैं।हम सबने देखे हैं। कुतुम्ब मिनार के नीचे दबे मंदिर के अवशेष और गणेश मूर्ति को आज भी देखा जा सकता हैं। ऐसे कितने ही मंदिर और मठ हैं जिन्हे मुस्लिम आक्रंताओं ने मस्जिद में बदल दिया। किन्तु उन्हे 'हिन्दु–मुसलमान सद्भावना का प्रतीक ' कहना हिन्दु भावना के साथ भद्दा मजाक हैं। दुर्भाग्य से सेक्यूलर मीड़िया हिन्दु आस्था पर निरंतर चोट कर रहा हैं । उन्हे या तो इतिहास की जानकारी नही हैं या फिर जान – बूझकर शरारत कर रहे हैं।

मस्जिद के सभागार में 260 स्तंभ हैं, जिनमे मूर्तियां उकेरी हुई हैं। क्या किसी मस्जिद मेंमूर्तियां होती हैं? साफ है, वहॉ कभी भद्रकाली मंदिर था जिसे आदमशाह के राज में तोड़ा गया।

चीन के बने समान का प्रयोग बन्द करे

भारत का 190 देशों से व्यापार होता है। उनमे सबसे बड़ा ट्रेड़ पार्टनर चीन हैं। चीन को भारत से केवल 9 मिलियन ड़ॉलर का सामान जाता हैं और चीन से भारत 61.8 बिलियन ड़ॉलर का सामान आता है। यानी 52.8 बिलियन ड़ॉलर का घाटा प्रतिवर्ष होता हैं। उक्त बाते राष्ट्रीय स्वदेशी सुरक्षा अभियान के अखिल भारतीय प्रमुख श्री सतीश कुमार ने मध्यप्रदेश के इन्दौर में माई मंगलेशकर सभाग्रह में ड़ॉ हेडगेवार जन्मशताब्दी सेवा न्यास द्वारा आयोजित व्याख्यानमाला में कही। इस अवसर में उन्होने कहा कि हमको कुल विदेशी धाटे का 44 फीसदी सिर्फ चीन से होता हैं। भारी छूट देकर, मजदूरों का शोषण कर, पर्यावरण का विनाश कर, गुणवत्ता की उपेक्षा कर अत्यधिक मात्रा में उत्पाद कर चीन सस्ता माल भारत भेजता है जिसकी वजह से हमारे उद्योग बंद हो रहे हैं। हमारे लघु उद्योग बंद होने से लाखों नौकरियां चली गई।

सुभाषित

ईशावास्यमिदं सर्व, यत्किंचिद् जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुज्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद् धनम।।

अर्थ– इस संसार में जो कुछ स्थिर व गतिशील है, वह सब ईश्वर का है। इसलिये त्याग करते हुए ही उपभोग करो, लोभ मत करो, धन भला किसका हुआ है।

इस्लामी जिहादियों के चंगुल में फँसा कश्मीर

अमरनाथ यात्रियों पर जिहादी हमला हो या बंगाल और केरल की हिंसा । जब भी इस प्रकार की धटनायें धटती है तब तुरन्त मानवता की दुहाई दी जाने लगती है। सुरक्षा व्यवस्था में चूक के सवाल तो उठाये जाते है लेकिन इस तथ्य को उजागर नही होने दिया जाता कि आखिर वह कौन सी और किस प्रकार की सोच है जो हिन्दुओं को तीर्थ यात्राओं पर जाने से रोकने प्रयास–रत रहती है। कश्मीर और बंगाल में जो हो रहा उसमें मीडिया का एक बड़ा वर्ग भी शामिल है जो असली मुद्दे को भटकाने में लग जाता है। अमीहाल में अनंतनाग के पास जिहादियों ने हमला किया जिसमें सात श्रद्धालुओं की मौत हो गयी। इस्लामी आतंकवादियों ने पन्द्रह साल पहले अक्षर धाम मंदिर में हमला किया था जिसमें तीस श्रद्धालु मारे गये थे। आज से सत्रह साल पहले भी अमरनाथ यात्रा पर सुनियोजित ढ़ंग से क्रमवार हमले किये गये थे। उस समय तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी पाकिस्तान से सम्बन्ध सुधारने की पहल कर रहे थें। अब भी अमरीका और इजराईल से सम्बन्ध अटूट बन रहे हैं। क्या यही रवीज निकालने का प्रयास है ? इन घटनाओं का सीधा राजनैतिक सम्बंध है। देश के भीतर जुनैद की हत्या पर छाती पीटपीटकर अपनी सहानुभूति दिखाने वालों की जुबान पर क्या ऐसे मामलों में लकवा मार जाता है ? अपने को मानवतावादी कहने वाले कहॉ गायब हो जाते है ? जब सेना के जवानों पर कश्मीर में पत्थर और गोलियॉ बरसाई जाती हैं। खुलेआम बंगाल में सैकड़ो हिन्दुओं के धरों को आग लगा दी जाती है, ये मानवतावादी हैं या पाखंड फैलाने वाले – इनसे क्या सावधान रहने की जरूरत नही है ? यह अकेला पाखंड नहीं वरन दोमुँहापन है। चेतन भदृ जैसे प्रासिद्ध लेखक ट्वीटर पर लिखते है कि '' जुनैद की हत्या पर मीडिया का कहना है कि वह मुसलमान था इसलिये मारा गया। अब ऐसे मानवतावादी यह कहने से क्यों बचते हैं कि अमरनाथ हमले में हिन्दू होने के कारण ही ये श्रृद्धालु मारे गये। मीडिया और सेकुलर बुद्धि जीवियों का एक गिरोह इस्लाम की आंतकी सोच और घाटी मु पनपी आतंकी कसरत पर हमेशा पर्दा डालने की कोशिश में रहा है। वैसे भी जाकिर (मूसा जैसा) आतंकी यह साफ कर चुका है कि कश्मीर समस्या अलगाव या स्वातंत्रता से जुड़ा मामला है ही नहीं। यह तो इस्लामी संघर्ष है। वैसे भी परतदर परत यह बात सामने आ ही चुकी है कि विदेशी चंदे से पलने वाले ये तथा कथित मानवधिकारी नकसलवाद, आतंकवाद से मुकाबला करते सैन्यबलों का उत्साह ठंडा करने के दुतकृत्य में लगे ही रहते हैं। अभी तक की तमाम वारदातों और गतिविधियों पर दृष्टिपात करने के बाद कोई भी राष्ट्रहित का चिन्तन करने वाला साधारण से साधारण व्यक्ति भी इस निर्णय पर पहुँच जाता है कि कश्मीरियत के नाम पर खुलेआम आतंकवादियों, जिहादियों, हिन्दुओं के हत्यारों का समर्थन करने वाले कट्टरवादी तत्वों ने ही भारत में बहाबी आतंक को पैर पसारने की सुविधायें प्रदान की हैं। इनमें वे सेकुलर दल भी अछूते नही हैं जो वोट बैंक की लालच में इस्लामी आतंक के दंश को झुठलाने की कोशिश करते रहे हैं। आश्चर्य तो इस बात पर भी है कि अब भी भारत में मुसलमानों की बहुत आबादी होने के बावजूद और कश्मीर घाटी से लगभग हिन्दुओं का सफाया कर दिये जाने के बाद भी ये सेकुलेरिटी का चोला पहनने वाले राजनीतिक दल कश्मीर घाटी में चल रही आतंकी घटनाओं को इस्लामी कहने का खतरा मोल लेने का साहस नही रखते। इसके विपरीत ये दल बुरहानबानी जैसे आतंकी के साथ सहानुभूति जताते है उसकी मौत पर ऑसू बहाते है और राजनैतिक फायदा उठाने मे तनिक भी शर्म महसूस नही करते। उल्टे सेना पर ही सवाल खड़ा करते हैं। कश्मीर मे शब–ए–कदर की रात डी.एस.पी अयूब पंडित ही हत्या, वह भी बहसी तरीके से पीट–पीट कर मारा जाना इसका एक उदाहरण है। कश्मीर कब तक इन आतंकियों और उनके समर्थकों की ज्यादितियॉ सहन करता रहेगा ?

आतंकी मेनन की फॉसी क्यों रद्द कराना चाहते थे गॉधी

कांग्रेस के नेतृत्व में बने 18 दलों के गठबंधन देश के उपराष्ट्रपति पद के लिये गोपालकृष्ण गॉधी के नाम की घोषणा की गयी है। इस नाम को लेकर विपक्ष में खुसुर – फुसुर शुरू हो गई हैं। गोपाल कृष्ण गॉधी का नाम सामने आने पर सबसे पहले शिवसेना के संजय राऊत ने सोनिया गॉधी से प्रश्न पूछा हैं कि जिस व्यक्ति ने कुख्यात आतंकी मुबई बम विस्फोट के दोषी याकूब मेनन की फॉसी की सजा रूकवाने के लिये एड़ी–चोट कर दी हो, राष्ट्रपति तक गुहार लगायी हो, ऐसे व्यक्ति को विपक्ष ने किस पूर्व भूमिका के आधार पर उम्मीदवार बनाया हैं। ऐसा व्यक्ति क्या किसी संवैधानिक पद के लिये उपयुक्त साबित हो सकता हैं ? इतना ही नही गोपाल कृष्ण गॉधी ने गत 10 अक्टूबर 2016 को एक अंग्रजी दैनिक (द हिन्दुस्तान टाईम्स) में अपने विचार रखे थे। उस लेख में दो अंश कुछ इस प्रकार थे–''भारत के लोगो का यह सोचना है कि कश्मीर हमारा हैं, ने कश्मीरियों को भारत के खिलाफ एकजुट कर दिया हैं।'' दूसरा अंश '' भारतीय सेना के कारण कश्मीरी स्वयं को गुलाम कैदी के समान महसूस करते है।'' इन दोनो कथनो का निष्कर्ष यही निकल रहा हैं कि गोपाल जी पाकिस्तान की बातो का समर्थन कर रहे हैं। उनकी दृष्टिमें कश्मीर घाटी और उसके पॉच आतंक ग्रस्त जिले ही समूचा कश्मीर हैं। जम्मू – लद्दाख तथा शेष घाटी का कोई अस्तित्व ही नही हैं।

श्री गॉधी का समर्थन करने वाले 18 दलों के गठबंधन के नेता सोनिया, राहुल, शरद यादव, अखिलेश यादव, मायावती आदि तमाम नेताओं को देश को स्पष्टीकरण देना चाहिये कि कश्मीर के मामले में वे श्री गॉधी के विचारों से कहॉ तक सहमत हैं. .? सन् 1993 का मुंबई हमला भारत में पहला आतंकवादी श्रृंखलाबद्ध विस्फोट था। इसमें 257 लोग मारे गये थे एवम् 713 घायल हुये थे। राष्ट्रपति ने तथ्यों के आधार पर उसकी दया याचिका अस्वीकार कर दी थी। उसको बचाने आगे आना राष्ट्रविरोधी कदम था। 18 वर्ष उस पर मुकदमा चला था। कांग्रेस स्वयं याकूब मेनन को फॉसी दिये जाने के पक्ष में थी। उनकी ` उम्मीदवार भूमिका उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के संदर्भ में कठघरे में खड़ा करती हैं। अब यह तर्क मान भी लिया जाये कि वे फॉसी की सजा के विरूद्ध हैं तो अब तक या इस मामले के पहले उन्होने कितने लोगो की फॉसी की सजा रूकवाने के लिये राष्ट्रपति को पत्र लिखे ? अगर नही तो याकूब मेनन के मामले में क्यों पत्र लिखा था ?

विचार – कण

''जब तक इस देश में संगत और पंगत चलती रहेगी। तब तक इस देश का और इस हिन्दू समाज का कोई बाल बांका नहीं कर सकता। संगत यानि सामूहिक भजन और पंगत यानि सामूहिक भोजन।'' **श्री गुरू नानक देव**

कश्मीर के लिये कटाया सिर

यह जनसंघ के संस्थापक ड़ॉ. स्यामा प्रसाद मुखर्जी की शहादत का ही परिणाम है कि हम आज बिना परमिट के जम्मू आ जा रहे हैं। 6 जुलाई 1901 में जन्मे ड़ॉ. मुखर्जी केवल 33 वर्ष की आयु में कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त हुये। विश्व के सबसे युवा कुलपति होने का सम्मान प्राप्त किया। वे 1938 तक इस पद पर रहे। बाद में उन्हें कांग्रेस प्रत्याशी और कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में बंगाल विधान सभा परिषद का सदस्य चुना गया, किन्तु कांग्रेस द्वारा विधायिका के बहिष्कार निर्णय लेने के पश्चात् उन्होने त्याग पत्र दे दिया। बाद में उन्होने स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा और निर्वाचित हुये। जवाहरलाल नेहरू ने उन्हे अंतरिम सरकार में उद्योग एवमृ आपूर्ति मंत्री के रूप में शामिल किया। लेकिन नेहरू और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री लिकायत अली के बीच हुये समझौतें के पश्चात 6 अप्रैल 1950 में केन्द्रीय मंत्रीमण्ड़ल से त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद उन्होने राष्टीय स्वयं सेवक संघ के तत्कालीन सर संघचालक श्री गुरूजी से परामर्श लेकर 21 अक्तूबर 1951 में जन संघ की स्थापना की। 1951–52 के आम चुनाव में जनसंघ के तीन सांसद चुने गये, जिनमे से एक ड़ॉ. मुखर्जी भी थे। ड़ॉ. मुखर्जी भारत की अखण्ड और कश्मीर के विलय के दृढ़ समर्थक थे। धारा 370 के राष्ट्रघात प्रावधानों को हटाने के लिये भारतीय जनसंघ ने हिन्दु महासभा और रामराज्य परिषद के साथ सत्याग्रह आरंभ किया। मुखर्जी इस प्रण पर सदैव अड़िग रहे कि जम्मू और कश्मीर

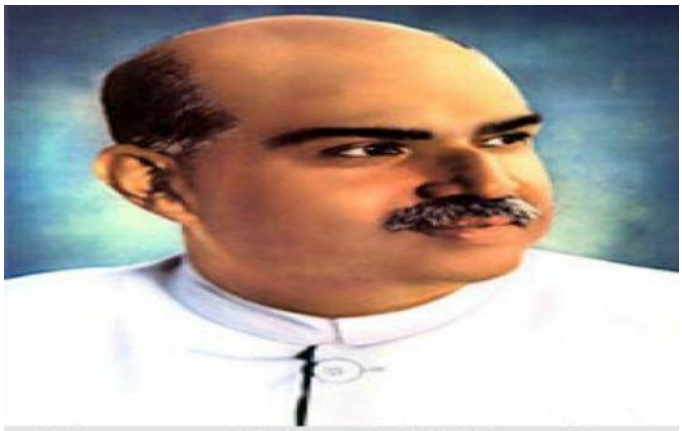

Shyama Prasad Mukherjee

भारत का एक अविभाज्य अंग हैं। उन्होने नारा दिया था, ''एक देश में दो निशान, दो विधान और दो प्रधान नही चलेगा–नही चलेगा'' उस समय अनुच्छेद 370 में यह प्रावधान किया गया था कि कोई भी भारत सरकार से अनुमति लिये बिना कश्मीर की सीमा पर प्रवेश नही कर सकता हैं। ड़ॉ. मुखर्जी इस प्रावधान के सख्त खिलाफ थे। उनका कहना था कि नेहरू ने बार–बार ऐलान किया हैं कि जम्मू और कश्मीर का भारत मे 100प्रतिशत विलय हो चुका हैं, फिर भी यह देखकर हैरानी होती है कि इस राज्य में कोई भी भारत सरकार से अनुमति लिये बिना दाखिल नही हो सकता हैं। उन्होने इस प्रावधान के विरोध में भारत सरकार से बिना परमिट लिये जम्मू एवम् काश्मीर जाने की योजना बनाई। इस अभियान के तहत उनका दूसरा मकसद था वहां के वर्तमान हालात से स्वयं परिचित होना, क्योकि जम्मू एवम् काश्मीर के तत्कालीन 'प्रधानमंत्री' शेख अब्दुल्ला की सरकार ने वहां के सुन्नी कश्मीरी मुसलमानों के बाद दूसरे सबसे बड़े स्थानीय भाषायी समाज ड़ोगरा समुदाय के लोगों पर असहनीय जुल्म ढ़ाना शुरू कर दिया था। नेशनल कॉन्फ्रेंस का डोगरा विराधी उत्पीड़न 1952 की शुरूआती दौर में अपने चरम पर पहुँच गया था। जम्मू के नेता प्रेमनाथ डोगरा ने बलराज मधोक के साथ मिलकर 'जम्मू एवम् काश्मीर प्रजा परिषद् पार्टी ' की स्थापना की इस पार्टी ने डोगरा अधिकारों के अलावा जम्मू एवम् काश्मीर राज्य के भारत संघ में पूर्ण विलय की लड़ाई, बिना रूके, बिना थके लड़ी। ड़ॉ. मुखर्जी 8 मई, 1953 की सुबह 6:30 बजे दिल्ली रेल्वे स्टेशन से पैसेंजर ट्रेन में अपने समर्थको के साथ सवार होकर जम्मू के लिये निकले। उनके साथ बलराज मधोक, अटल बिहारी बाजपयी, टेकचंद, गुरूदत्त और पत्रकार भी थे। रास्ते में ड़ॉ. मुखर्जी की एक झलक पाने एवम् उनका अभिवादन करने के लिये लोगो का सैलाव उमड़ पड़ता था। जालंधर के बाद उन्होने बलराज मधोक को वापस भेज दिया और अमृतसर के लिये ट्रेन पकड़ ली। 11 मई 1953 को ड़ॉ जी कुख्यात परमिट व्यवस्था का उल्लघन करके जम्मू एवम् कश्मीर में प्रवेश किया।

प्रवेश करते ही उन्हे गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी के दौरान ही रहस्यमय परिस्थितियों में 23 जून, 1953 को उनकी मौत हो गई। नेहरू ने 30 जून,1953 को ड़ॉ. मुखर्जी जी की माता को शोक संदेश भेजा। उनकी माता जी ने 4 जुलाई को नेहरू को एक पत्र लिखकर अपने बेटे की मौत की जॉच की मांग की। नेहरू ने जांच की मांग को खारिज कर दिया। उन्होंने लिखा, ''मैने कई लोगों से पता किया है, उनकी मौत में किसी प्रकार का कोई रहस्य नही था। ''लेकिन सत्य यह है कि आज भी देश डॉ. मुखर्जी की मौत के कारणों पर पड़ा परदा हटते देखना चाहता है।

अद्भुत थे डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी। विलक्षण प्रतिभा के धनी, प्रखर देशभक्त। 'जम्मू–कश्मीर भारत का अभिन्ना अंग है, और रहेगा' का नारा गुंजाते हुए शेर की तरह शेख की 'हुकूमत' वाली घाटी में प्रवेश किया, पर सेकुलर दगाबाजी की भेंट चढ़ गए। आज अगर जम्मू–कश्मीर भारत का अंग है तो उसके पीछे डॉ. मुखर्जी के बलिदान का अप्रतिम योगदान है

— ललित कौशिक

सूचना

कृपया आप ~~अपना~~ ई–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल में भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । –

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com